आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2590 • उदयपुर, गुरुवार 27 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

आमदरी व रैन बसेरे में बांटे ऊनी वस्त्र

उदयपुर। पिछले कुछ दिनों में सर्द हवाओं के साथ बढ़ती ठिठुरन को देखते हुए नारायण सेवा संस्थान ने शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में ऊनी वस्त्र, कम्बल के वितरण का व्यापक अभियान शुरू किया है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने सोमवार को गिर्वा तहसील के आदिवासी बहुल गांव आमदरी में 120 कम्बल, 80 टोपे व 90 स्वेटर का वितरण किया। पोषाहार के रूप में उच्च गुणवक्तायुक्त बिस्किट के पैकेट भी दिए गए। इससे पूर्व 3,4,5,6,11 रेलवे स्टेशन व कच्ची बस्तियों में बड़ी संख्या में ऊनी वस्त्र व कम्बलों का वितरण किया गया। प्रताप नगर स्थित रैन बसेरा में रात्रि विश्राम करने वाले 100 से अधिक दिहाड़ी मजदूरों को भी कम्बल, मफलर, चप्पल, मौजे व टोपे का वितरण हुआ। संस्थान अध्यक्ष ने बताया कि सर्दी के तीखे तेवर के चलते संस्थान का यह अभियान नियमित रहेगा। 'सुकुन भरी सर्दी अभियान के दौरान संस्थान के मीडिया प्रकोष्ठ के भगवान प्रसाद जी गौड़, जसबीर सिंह जी दिलीप सिंह जी अनिल जी पालीवाल व रौनक जी माली भी मौजूद थे।

सासाराम (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

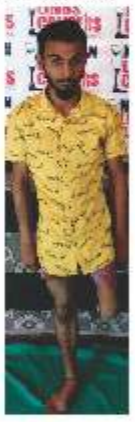

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का कम सतत कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 16 जनवरी 2022 को तान्या विकलांग संस्थान, सासाराम में संपन्न हुआ। शिविर शविर में रजिट्रेशन 133, कृत्रिम अंग माप 20, कैलिपर माप 20, ऑपरेशन चयन 29 का रजिट्रेशन, की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल (समाजसेवी), अध्यक्षता श्री डॉ. राजेन्द्र जी शुक्ला (अध्यक्ष तान्या विकलांग संस्थान सासाराम), विशिष्ट अतिथि श्रीमति मीना जी चौहान (सदस्य), श्री सुरेन्द्र जी अग्रवाल (समाजसेवी), श्री राजीवकुमार जी शुक्ला (सदस्य), श्री रवि जी तिवारी (कोषाध्यक्ष), डॉ अमीत जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), कैलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पी एन डॉ), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जीश्री बहादुर सिंह जी, श्री सत्यनारायण जी (सहायक), ने भी सेवायें दी।

राहत पहुंची उखलियात लाभार्थी प्रफल्लित

नारायण सेवा सेवा संस्थान की मुहिम 'सकून भरी सर्दी' के तहत मंगलवार को संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल के नेतृत्व में राहत टीम गरीबों और आदिवासियों के लिए सेवा सामग्री लेकर उखलियात पहुँची। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि कोटड़ा तहसील के दुर्गम पहाड़ीक्षेत्र में निवासरत आदिवासी मजदूर परिवारों व बच्चों को शीतलहर में मदद पहुंचाते हुए 190 कम्बल, 200 स्वेटर 170 टोपे और 100 जोड़ी चप्पल का वितरण किया गया। उन्होंने कहा राहत सामग्री लेने आये बच्चों और उनके परिजनों को शिक्षा व स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए प्रतिदिन नहाने व बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान स्थानीय विद्यालय के शिक्षकगण और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता लीला देवी जी मौजूद थे। शिविर में मीडिया प्रभाग के भगवान प्रसाद जी गौड़, जसवीर सिंह जी दिलीप सिंह जी, अनिल जी पालीवाल, रौनक जी माली, मनीष जी परिहार ने सेवाएं दी।

जबलपुर (मध्यप्रदेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का कम सतत कर रहा है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 16 जनवरी 2022 को विन्ध्य भवन, जबलपुर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता विध्या संस्कृति मंच शिविर में रजिट्रेशन 283, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर माप 32, ऑपरेशन चयन 29 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री संजीव जी राजक (मध्यप्रदेश स्टेट कमिश्नर), अध्यक्षता श्री विपुल जी पंवार (असिसेटड कमिश्नर), विशिष्ट अतिथि श्री विजयपांडेय जी चौहान (स्वास्थ्य विभाग), श्री बी.एस. जी परिहार (सचिव विध्या सांस्कृति मंच), श्री राजेन्द्रसिंह जी (निदान सेवा संस्थान), श्री डीआर. जी लखोरा, श्री प्रमोद जी श्री आर.के. जी तिवारी (शाखा प्रेरक), डॉ. नवीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), कैलीपर्स माप टीम सुश्री नेहा जी (पीएनडो), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी श्री हरीश जी रावत, (सहायक), श्री हितेश जी सेन (रसीद), श्री आदित्य जी (ऐंकर) श्री हेमन्त जी श्री मुन्नासिंह जी ने भी सेवायें दी।

दिव्यांगों के हित में दिव्य संकल्प

विजन डॉक्यूमेंट में वर्ष 2022 के अन्त तक दुर्घटनाग्रस्त दिव्यांगों के लिए उदयपुर में सेंट्रल फेबिक्रेशन यूनिट स्थापित किया जाना भी शामिल है। इससे प्रतिदिन सैकड़ो दिव्यांगग्रस्त व अंगविहिन जनों को अत्याधुनिक सुविधाजनक कृत्रिम हाथ–पैर मिलने लगेंगे।

संस्थान इसके माध्यम से भारत भर के 50 हजार दिव्यांगों को प्रतिवर्ष मदद पहुंचा सकेगा। संस्थान के वर्तमान सेवा कार्यों की जानकारी देते हुए सेवा प्रशांत जी मैया के सानिध्य में जयपुर में व निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल वे सानिध्य में उदयपुर मुख्यालय पर बड़ी संख्या में जरूरतमंदों को ट्राइसाइकल, व्हीलचेयर व सहायक उपकरण बांटे गए तथा 40 को कृत्रिम अंग लगाए गए। संस्थान की सूरत, हैदराबाद, लखनऊ, मथुरा, बड़ौदा, अहमदाबाद, मुंबई, लुधियाना, दिल्ली, नागपुर सहित 22 शाखाओं में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयेजित हुए और वहां के जिला प्रशासनिक अधिकारियों से भेटकर दिव्यांगता के क्षेत्र में विशेष कार्य करने की पहल की गई।

दिव्यांगों की सेवाओं में सोशल कॉरपोरेट रिस्पॉनिसबिलिटी के तहत ए. आर. टी. हाउसिंग एवं राइसो इंडिया लिमिटेड ने भी अपना सहयोग प्रदान किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

नर तन सम नहिं कवनिउ देही
जीव चराचर जाचत तेही।
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी।
ज्ञान बिराग भगति सु देनी।।

हाँ ये मनुष्य ऐसी देह मिल गयी। और देह मिलने के साथ में शाकाहारी परिवार मिल गया। देह तो कसाई को भी मिलती है। देह तो नॉनवेज खाने वालों को भी मिलती है। देह तो पशु–पक्षियों का वध करने वालो को भी मिलती है। वो इंसानियत की देह है, लेकिन इंसान नहीं वो हैवान है। जिसमें पशुओं को मारने का पाप कर लेते हैं, जो नॉनवेज खाने का पाप करके अपने पेट को कब्रगाह बना लेते हैं। जो नशा करके अपने शरीर को खराब कर देते हैं, जो परिवार को कलंकित कर देते हैं जिनके पितृ भी बहुत शाप देते हैं, ऐसे नर में नर नहीं है, वो नर पशु है, जिनमें ज्ञान नहीं होता बाबू।

रोहित जी – गुरुदेव एक भाई लिखते है, आपको प्रणाम करते है, आपके प्रवचन तो देखते है, मगर इनके जो दो दोस्त है, वो हमेशा एक–दूसरे से गप्पे लगाते रहते हैं। गप्पे भी ऐसी एक ने दूसरे से कहा मेरे भाई ने 200रन बनाये तो उसने कहा मेरा भाई तो रोज 400 रन बनाते हैं, और इस गप्प की वजह से आपस में दोनो एक–दूसरे से झगड़ने लगते हैं ?

गुरुदेव – हाँ समय का फेर है, रोहित जी और झगड़ा–कुटिल जो गप्पे लगाते है मन में शराबखोरी हो जाती है, नशा भी हो जाता है। नाना प्रकार के अवगुण आ जाते हैं, हमारे तो बापूजी बचपन में कथा सुनाते है, एक गप्पीराम थे, उनकी पत्नी ने कहा ये पड़ोस वाली माता और बहिने मुझे चिढ़ाती है। गप्पी जी की बहूँ आ गई, तो आप गप्प छोड़ दो, अब वो कहते ठीक है, हलवा वगैराह बना दो, लाडू बना दो मैं जाऊंगा, दो दिन में गप्प छोड़कर आ जाऊंगा, और दो–दो दिन भगे–भगे अरे शेर पीछा कर रहा है। सड़क के चने के वृक्ष चढ़ गया। चने का कौनसा वृक्ष होता है महाराज! चने का तो पौधा होता है, तो ऐसे गप्पों से समय है, कहा जो आप अपव्यय करो। इतना समय कहाँ से आ गया, आपके पास में और मैं तो आज सुबह स्वाध्याय में कह रहा था, ये भी नहीं कहना चाहिए था, कि समय कम पड़ता। समय न कम पड़ता है, न ज्यादा पड़ता है। समय न चक्रवर्ती सम्राट का दास है, न भिखारी के लिए दुर्लभ है, समय तो समय है।

सम्पादकीय

अपेक्षायें मानव जीवन को सुखी–दुःखी करने वाला प्रभावी घटक है। सामान्यतः अपेक्षाएं निःस्वार्थ होती हैं और स्वार्थयुक्त भी। वैसे अंतिम परिणाम यही आता है कि कैसी भी अपेक्षा हो वह पीड़ादायक ही होती है। क्योंकि अपेक्षाएं करना मानवमात्र का स्वभाव है। सारी की सारी अपेक्षायें कभी भी पूर्ण नहीं हो सकती।

ऐसी स्थिति में व्यक्ति जो पूर्ण हो चुकी अपेक्षायें हैं उनके बजाय जो अधूरी रह गई हैं उन अपेक्षाओं में उलझ जाता है। परिणामस्वरूप जो प्रसन्नता वह अनुभव कर सकता था पूर्ण अपेक्षाओं के कारण, वह उनसे तो चूकता ही है, पर जो अपूर्ण रहीं हैं उनके कारण वह दुःखी ही रहता है। अपेक्षा चाहे सद् हो या असद् दोनों ही पीड़ाकारक ही हैं। सद् अपेक्षा भले ही किसी ओर के लिये होगी पर उसमें भी पूर्णता न आने पर पीड़ा तो अपेक्षाधारी को ही होगी। असद् अपेक्षा तो पीड़ा देती ही है। तो हम अपेक्षारहित होने का प्रयास करें तो आनंद की यात्रा के पथिक हो सकते हैं।

कुछ काव्यमय

अपेक्षाओं के अम्बार में
दबा हुआ आदमी,
कैसे सुखी रह पायेगा?
उसे भान भी नहीं रहेगा
और जीवन का उल्लास
व्यर्थ में बह जायेगा।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मीठे बोल तो दे ही सकते हैं

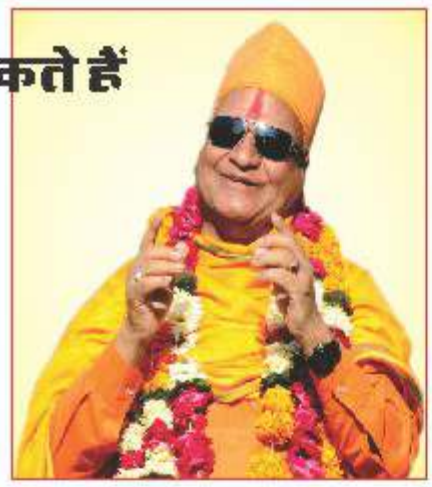

माना कि हमारे पास बाँटने के लिए अपार धन नहीं परंतु एक अपाहिज की सेवा के लिए हाथ तो हैं। परवाह नहीं यदि हमारे पास भूखों को देने के लिए अन्न–मंडार नहीं पर दो मीठे बोल तो हम दुःखीजनों को दे ही सकते हैं। परवाह नहीं जो हम सर्वथा साधनहीन हों, परंतु कराहती मानवता के दग्ध हृदय को अपने आंसू से, अपनी करुणा से नहला तो सकते हैं, उसके कलेजे को सहलाकर उसमें खटकता कांटा तो निकाल सकते हैं। थके हारे, जीवन की बाज़ी खो चुके, लड़खड़ाते इन्सान के टूटते विश्वास का सहारा तो बन सकते हैं। जिसकी आँखों का, जिसके दिल की कोठरी का दीया निराशा की आंधियों में बुझ चुका है– उसके लिए और कुछ नहीं तो अंधेरे की लाठी तो बन ही सकते हैं।

ऐसा कोई आदमी नहीं जिसके पास देने के लिए कुछ न हो। ऐसा समय नहीं, जब कुछ न दे सकते हों। अपने लिए सभी रोते हैं, इसलिए संसार में सर्वत्र दुःख है, छटपटाहट है, पराजय और पीड़ा है। कभी दूसरों के लिए हम रो कर देखें, एक ही बार, आजमाइश के तौर पर।

हमें भी वही आनंद, वही स्वाद मिलेगा कि फिर अपने रोने का नाम भी न लेंगे। इसलिए हम अपने बच्चों के लिए जियें, अपनी पत्नी के लिए जियें, अपने माता–पिता, बंधु–बांधवों, अपने देश के लिए, सारी मानवता के लिए जियें। जिस सीमा तक हम दूसरों के लिए जियेंगे, उसी सीमा तक आनंद के निकट होते जायेंगे।

राम ने पिता के वचन के लिए दे दिया, भरत ने उसी राज्य में रहते हुए राज छोड़ दिया; कृष्ण ने सब कुछ पाकर भी सबकुछ छोड़ दिया; बुद्ध ने दुःखी मानवता के सुख का अनुसंधान करने के लिए सांसारिक वैभव का त्याग कर दिया, दूसरे जियें, इसीलिये ईसा ने अपना जीवन दिया, राष्ट्रीय एकता के लिए गांधीजी ने गोलियों की बौछार सीने पर झेली, देश सेवा का दीवाना जवाहरलाल महलों का आराम छोड़ आजन्म "दरिद्रनारायण" के साथ गली–कूचों में डोलता रहा और शांति के उपासक शास्त्री ने धधकती युद्ध की आग को अपनी आहुति से बुझाया। जो अपने को दे देता है, वह सबकुछ पा जाता है। वह साधनहीन होकर भी पूर्ण हो जाता है। यह आत्मदान जड़ में प्राण की सृष्टि करता है। यह समर्पण मरण की सेज पर अमृत हो जाता है। इसलिए हम देते चलें, लुटाते चलें। घूंघट उठाकर अपने हृदय में छिपे परम प्रियतम को निहारें। देखें, बस एक बार देखें, आनंद मिलेगा–मिलकर रहेगा।

–कैलाश 'मानव'

निराशा नहीं आशा रखो

देखिये कोई भी चीज जो समय के साथ–साथ बूढ़ी होती चली जाती है जिसका महत्व कम होता चला जाता है तो व्यक्ति अंदर से भी टूटता चला जाता है। लेकिन आत्मबल और आत्मविश्वास वाले लोग जीवन के अंतिम क्षण तक टूटते नहीं है। अपना आत्मविश्वास मजबूत बनाये रखते हैं और उसी के बतौर वो पूरा जीवन खुशी–खुशी जीते है। बाज़ जो है वो लगभग सत्तर वर्ष जीता है, परन्तु अपने जीवन के 40 वें वर्ष में आते–आते उसे एक महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ता है। उस अवस्था में उसके भारीर के तीन प्रमुख अंग निष्प्रभावी होने लगते है। पँजे लम्बे और लचीले हो जाते हैं व शिकार पर पकड़ बनाने में अक्षम होने लगते हैं। पँख भारी हो जाते हैं और सीने से चिपकने के कारण पूरे खुल नहीं पाते, उड़ानें सीमित कर देते हैं। भोजन ढूँढ़ना, भोजन पकड़ना और भोजन खाना तीनों प्रक्रियायें अपनी धार खोने लगती हैं। उसके पास तीन ही विकल्प बचते हैं या तो वो देह त्याग दे या अपनी प्रवृत्ति छोड़ गिद्द की तरह जो फेंका हुआ भोजन है वो ग्रहण करें या फिर स्वयं को पुनःस्थापित करें, आकाश के एकाधिपति के रूप में जीवन भर रहता हैं। हमें किसी भी परिस्थितियों में हार न मानते हुये जीवन के आखिरी क्षण तक डँट कर मुकाबला करना चाहिये। कहते हैं ना डूबते को तिनके का सहारा मिलता है तो वो बच जाता है, उसके प्राण बच जाते हैं। जब तक हमारे में एनर्जी है, एनर्जी का 99.99 प्रतिशत भी व्यय हो जाये लेकिन जो बचा हुआ 0.1 प्रतिशत है वो कई बार 99 पर भी भारी पड़ता है। व्यक्ति मृत्यु को भी टाल देता है।

व्यक्ति बड़ी से बड़ी परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता है तो आगे चलकर सफलता उसके कदम चूम लेती है इसलिये निराश न होइये, आशा के सरोवर में डुबकी लगाइये। जबरदस्त प्रयत्नशील इच्छाशक्ति से लेस रहिये और सब से अहम बात है अपना आत्मसाहस, अपना आत्मविश्वास कभी मत खोइये। मैं कुछ नहीं कर सकता, नेगेटिव विचार मत अपनाइये। आप बहुत कुछ कर सकते हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अगले दिन 8 मई को दोपहर 3 बजे मुख्य समारोह था। सब समय पूर्व ही वहां पहुँच गए। एक दिन पूर्व किये गये पूर्वाभ्यास के अनुसार ही सबको बिठाया गया। पद्मश्री तथा पद्मभूषण विजेताओं को एक तरफ बिठाया गया। पद्म विभूषण विजेताओं को दूसरी तरफ बिठाया गया। कई बड़ी बड़ी हस्तियां, जिन्हें पुरस्कार मिला था। मगर वे रिहर्सल में उपस्थित नहीं थे वे इस समारोह में नजर आ रहे थे। ऐसी ही एक हस्ती सचिन तेंदुलकर थी जिसे कैलाश के साथ ही पुरस्कार मिला था।

राष्ट्रपति के सुरक्षा गार्ड जगह जगह खड़े थे। सभी उत्सुकता से राष्ट्रपति के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। ठीक 3 बजी और राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह का दरबार हॉल में प्रवेश हुआ। उनके आते ही सभी खड़े हो गए। राष्ट्रगान के साथ समारोह शुरू हुआ। गृह सचिव ने एक एक करके नाम पुकारना शुरू किया। विजेता अपने स्थान से उठते और पूर्वाभ्यास में कराए गए तरीके के अनुसार चल कर राष्ट्रपति के पास जाकर सम्मान ग्रहण करते। उस वर्ष किसी को भी भारत रत्न नहीं मिला था इसलिये सर्व प्रथम पद्म विभूषण से सम्मानित होने वालों को बुलाया गया, उसके बाद पदमभूषण तथा अन्त में पद्मश्री विजेताओं का क्रम आया।

समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्य हेतु कैलाश चन्द्र मानव–ज्यूं ही पुकारा गया, कैलाश अपने स्थान से उठा, अपने माता–पिता को मन ही मन नमन किया और राष्ट्रपति की ओर अग्रसर हुआ। कैलाश जब तक वहां पहुंचे तब तक दो तीन पक्तियों में कैलाश के कार्यो का उल्लेख किया गया। कैलाश के राष्ट्रपति के सम्मुख पहुँचते ही फिर उसका नाम लिया गया।

कैलाश का दिल जोरों से धड़क रहा था, अपने आपको संयत करते हुए वह राष्ट्रपति के सामने खड़ा हुआ और दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया। उस वक्त उसके आश्चर्य की सीमा नहीं रही जब राष्ट्रपति ने उससे बात की और कहा कि मैं आपको व्यक्तिगत बधाई देती हूं। राष्ट्रपति आमतौर पर किसी से बात नहीं कर रही थी सिवाय कुछ नामी–निरामी हस्तियों के। कैलाश भी उनसे कुछ कहना चाहता था मगर वह सिर्फ धन्यवाद फुसफुसा कर रह गया। **अंग - 218**

बोध ही ज्ञान है

एक बार एक महिला अपने किशोर पुत्र का शव लेकर भगवान बुद्ध के पास पहुँची और बोली आप भगवान हैं इसे जीवित कर दें। भगवान ने कहा –कर दूँगा, लेकिन तुम्हें एक मुट्ठी चावल कहीं से माँगकर लाना होगा। महिला तत्काल चलने को हुई। भगवान ने रोका, कहा–लेकिन याद रखो ऐसे घर से लाना जहाँ आज तक किसी की मृत्यु न हुई हो। महिला आस–पास के कई गाँवों में प्रायः हर घर पहुँची और फिर भगवान के पास लौट आई। बोली –मैं समझ गई। अब मुझे अपना पुत्र जीवित नहीं कराना। मैं जान गई ऐसा कोई घर नहीं जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो। मैं जान गई कि मृत्यु अटल है और सभी की